National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.nationaljournals.com
ISSN: 2455-9040
Received: 28-04-2021, Accepted: 20-05-2021, Published: 11-06-2021
Volume 6, Issue 2, 2021, Page No. 32-36

राजिंदर सिंह बेदी विरचित 'क्वारंटीन' कहानी का पुनर्पाठ

चेतन विष्णु रवेलिया

एम.ए.नेट जे.आर.एफ., हिंदी विभागप्रमुख, एम. आय. टी. वि. जी. एस तथा जूनियर कालेज, अहमदनगर, महाराष्ट्र, भारत

सारांश

समाज और साहित्य का घनिष्ट संबंध है| समाज ही वह जीवन रस है जिससे साहित्यरूपी बेल फलती - फूलती है| इस समाज में मानव की विभिन्न समस्याओं, उसके अस्तित्व, चिंताओं को सदैव साहित्य में जगह मिलती रही है| वर्तमान दौर में समूचा विश्व अभूतपूर्व महामारी 'कोरोना' से जूझ रहा है| इस महामारी से त्रस्त समाज और मानवजाति की त्रासदी को साहित्य में आज भी अभिव्यक्ति मिल रही है| इसी वर्तमान संदर्भ में उर्दू के प्रसिद्ध रचनाकार राजिंदर सिंह बेदी रचित 'क्वारंटीन' कहानी प्रासंगिक हो उठती है| कुछ रचनाएँ जितनी सटीकता से उस काल की नब्ज पकड़ती हैं उतनी ही सटीकता से आने वाले समय की भी और इसी क्रम में वें कालजयी सिद्ध होने लगती हैं| विवेच्य कहानी 'क्वारंटीन' आज के दौर में शत - प्रतिशत खरी उतरती है| प्रतीत होता है कि यह हमकालीन दौर में ही लिखी गई है और वर्तमान समय से संवाद करने को लालायित है|

बीज शब्द: महामारी, कोरोना, क्वारंटीन, प्लेग, हमकालीन, कालजयी, संवेदनहीनता, अकर्मण्य, निष्काम, मानवीयता

प्रस्तावना

आज तक विश्वभर में अनेकों महामारियाँ फैलीं| इन महामारियों ने समूचे चराचर को प्रभावित किया है| ब्यूबोनीक रोग, इबोला, मलेरिया, हैजा, एचआईवी एड्स, प्लेग और अब कोरोना महामारी से हम सभी जूझ रहे हैं| गत वर्ष मार्च 2019 से यह महामारी शुरू हुई जिसने अब विकराल रूप धारण कर लिया है उसकी गिरफ्त से छूटना मुश्किल होता जा रहा है| समाज की कोई भी समस्या क्यों न हो साहित्य में चित्रित हुए बिना नहीं रह सकती यही कारण है कि साहित्य और रचनाकार इस प्रकार की महामारियों का समाज पर प्रभाव, मानव के लिए उत्पन्न खतरों को स्थान देता आया है| मास्टर भगवानदास की 'प्लेग की चुड़ैल', फणीश्वरनाथ 'रेणू' की 'पहलवान का ढोलक', महाप्राण निराला का उपन्यास 'कुल्लीभाट' आदि रचनाओं में तत्कालीन समय में फैली महामारियों तथा समाज और मानवजाति पर उसके प्रभावों को चित्रित किया गया है| ऐसी ही एक कहानी उर्दू के लब्ध प्रतिष्ठित रचनाकार राजिंदर सिंह बेदी जी ने 'क्वारंटीन' शीर्षक से लिखी जो आज की इस कोरोना महामारी से त्रस्त समय में पुनर्पाठ की अपेक्षा करती है|

उर्दू अदब में बेबाक अभिव्यक्ति की मिसाल इस्मत चुगताई, कृष्ण चंदर, मंटो और राजिंदर सिंह बेदी के नाम प्रमुखता से लिए जाते हैं| बेदी जी प्रगतिशील लेखकों के आंदोलनों से गहरे जुड़े रहे|

कहानीकार, निदेशक, संवाद लेखक, पटकथा लेखक के रूप में वें बराबर समादृत रहे हैं| प्रसिद्ध फिल्मों 'एक चादर मैली सी', 'आँखिन देखि', 'दस्तक', 'अनुपमा', 'अनुराधा' जैसी कैई फिल्मों के लिए पटकथा तथा संवाद लेखन करनेवाले राजिंदर सिंह का जन्म 1 सितंबर, 1915 को पंजाब के सियालकोट में हुआ था| इनकी लाजवंती विभाजन के साथ स्त्री विमर्श की भी उत्कृष्ट कहानी है| साथ ही गरम कोट, घर में बाजार भी इनकी चर्चित कहानियाँ रहीं| मूलत: कहानीकार के रूप में उर्दू साहित्य में उनका नाम आदर के साथ लिया जाता है| "बेदी के कथा साहित्य में जन-जीवन के संघर्ष, उनकी आशा -निराशा, मोहभंग और अंदर - बाहर की विसंगतियों पर सशक्त रचनाएं हैं| सही अल्फ़ाज़ों का चुनाव और थोड़े में बहुत कुछ कह देना बेदी की खासियत है| बेदी की कहानियों के कथानक घटना - प्रधान की बजाय ज्यादा भावना प्रधान हैं पर इन कहानियों में एक कथ्य जरूर होता है जिसका निर्वाह वे बड़े ही ईमानदारी से करते थे|"1 राजिंदर सिंह बेदी की 'क्वारंटीन' कहानी आज के समय में प्रासंगिक हो उठती है, विषय की दृष्टि से और कथ्य की दृष्टि से भी| 1940 में लिखित इस कहानी का उर्दू से अनुवाद किया है संजीव कुमार तथा डॉ. जिया उलहक जी ने| कहानी आधारित है उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिशराज में फैली प्लेग महामारी के अकांड तांडव पर| इस महामारी से उबरने के उपरांत अंग्रेजों द्वारा ऐसी महामारियों से निपटने के लिए एपिडेमिक डिसिसज ऐक्ट (महामारी अधिनियम) 1897 बनाया गया| सरकार द्वारा इस अधिनियम के तहत ही कदम उठाए भी गए थे|

आज कोरोना महामारी से भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व त्रस्त है| भय और दहशत भरे इस माहौल में जीना भी दुरूह होने लगा है| ऐसा प्रतीत होता है कि हमने जितना प्रकृति को नुकसान पहुँचाया उसी का बदला प्रकृति ले रही है किंतु यह उचित भी नहीं लगता क्योंकि प्रकृति तो माँ है वह कैसे अपनी संतानों को तकलीफ दे सकती है? इसलिए यह विचार सामने आया की वह स्वयं को हील (स्वस्थ) कर रही है| चाहे जो हो किंतु इस प्रकार की महामारियों का सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ता है समाज के निम्न वर्ग पर| देहाड़ी मजदूरों, छोटे किसान, गरीबों, ठेलेवाले, ऑटो रिक्शा चालक जैसे कई छोटे - मोटे काम करनेवालों पर कहर बरसता है| कोरोना की पहली लहर के खतरनाक प्रभावों से हम लोग परिचित ही हैं| इन प्रभावों के अलावा सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ता है, हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर| कोरोना के बचाव के तरीकों में सबसे कारगर तरीका है घर पर रहना| 'घर पर रहें, सुरक्षित रहें' जैसी सूचनाओं से अखबार, तथा न्यूज चैनल भरे रहते हैं| किंतु सतत घर पर रहना भी किसी खौफ से कम नहीं है क्योंकि मानव सामाजिक प्राणी है| समाज से कटकर रहना सदैव तकलीफदेह ही होता है| इसी 'क्वारंटीन' के खौफ, पीड़ा, प्रशासन की कुनीति, उच्च वर्ग के दिखावटीपन तथा निष्काम सेवा जैसे विषयों को बेदी जी की कहानी में देखा जा सकता है जो आज की स्थितियों से जुड़ने लगती है और इसी क्रम में प्रासंगिकता उभरने लगती है|

जैसाकि पहले ही बताया जा चुका है कि विवेच्य कहानी प्लेग महामारी की पृष्ठभूमि पर आधारित है| प्लेग होने की स्थिति में भी आदमी को अलग - थलग किया जाता था और आज कोरोना महामारी के समय में भी किया जाता है| आज क्वारंटीन दो स्थितियों में हम सभी भोग रहे हैं पहला - कोरोना होने की स्थिति में और दूसरे कोरोना न हो इसलिए बचाव की स्थिति में किंतु दोनों ही स्थितियाँ पीड़ा और खौफ से ही भरी पूरी है| कहानीकार ने क्वारंटीन के खौफ को यूँ बयान किया है, "प्लेग तो ख़ौफ़नाक था ही, मगर क्वारंटीन उससे भी ज़्यादा ख़ौफ़नाक था। लोग प्लेग से इतने हैरान-परेशान नहीं थे जितने क्वारंटीन से, और यही वजह थी कि स्वास्थ्य विभाग ने शहरियों को चूहों से बचने की सलाह देने

के लिए जो आदमी के क़द के बराबर इश्तिहार छपवाकर दरवाज़ों, और सड़क-चौराहों पर लगाया था, उसपर "न चूहा न प्लेग" के नारे को और बढ़ाते हुए "न चूहा न प्लेग", के साथ "न क्वारंटीन" भी लिख दिया था।"2 इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि क्वारंटीन का डर प्लेग जैसी महामारी से भी अधिक किस कदर लोगों के दिलों - दिमाग पर हावी हो चुका था| कहानी के दो प्रमुख पात्र हैं - पहला एक डाक्टर तथा दूसरा विलियम भागू जो एक सफाई कर्मचारी है| डाक्टर उच्च वर्ग का तथा भागू निम्न वर्ग का प्रतिनिधित्व करते दृष्टिगोचर होते हैं किंतु भागू अपने कर्म और विचारों से नायकत्व ग्रहण करने लगता है|

इस कोरोना महामारी के भयावह समय में न्यूज चैनल्स के साथ देश - विदेश के लोगों, हमारे अपने रिश्तेदारों, परिचितों के इससे संक्रमित होने की खबरें दिमाग पर भी असर करती चली जाती हैं और यही कारण है की हम वही सोच - सोचकर यदि संक्रमित नहीं हैं तो भी कोरोना की चपेट में आ जाते हैं| आज डाक्टरों की संख्या भी दिन - रात बढ़ते मरीजों की तुलना में कम हैं| और यह समय कितना खतरनाक है जिसमें कोरोना से दम तोड़ते तथा शवों में परिवर्तित होते हजारों लोगों के अंतिम संस्कारों हेतु भी लंबी लाइनें लगानी पड़ रही हैं| कोई परिवार के सदस्य भी व्यक्ति के अंतिम दर्शन नहीं कर सकता कैसी विडंबना है! इन सबमें प्रशासन की कुनीतियाँ भी उजागर होती हैं| कहानीकार ने लिखा है, "ज़्यादा मौत होने की वजह से मृत शरीर का आख़िरी क्रिया-कर्म भी क्वारंटीन के नियम क़ानून के हिसाब से ही होता था, यानी सड़कों पर पड़ी लाशों को मुर्दा कुत्तों की लाशों की तरह घसीट कर एक बड़े ढेर की सूरत में जमा किया जाता और बग़ैर किसी के धार्मिक नियम और रस्म पूरा किए, पेट्रोल डाल कर सबको आग के हवाले कर दिया जाता और शाम के वक़्त जब डूबते हुए सूरज की लालिमा के साथ जलती लाशों की लाल लाल लपटें उठती तो दूसरे मरीज़ यही समझते कि तमाम दुनिया को आग लग रही है।" 3 उक्त वर्णन केवल वर्णन भर नहीं रह जाता अपितु हमारी संवेदनाओं को झकझोर देता है| स्वयं कहानी का डाक्टर भी इस क्वारंटीन एवं प्लेग के खौफ से लंबे समय तक कार्बोलिक ऐसिड से हाथ धोता तथा कई प्रकार की दवाइयाँ खाता रहता| आज एक तरफ कोरोना संक्रमितों के बढ़ते आँकड़े और दूसरी तरफ क्वारंटीन का खौफ और दो पाटन के बीच में साबुत नहीं बच पा रहा कोई!

प्लेग जितना भयावह था उससे कहीं अधिक कोरोना है जो नित - नवीन रूपों में आ - आकर समूची मानवजाति को विनाश के गर्त में ले जा रहा है| कहानी का एक पात्र विलियम भागू जो सफाई कर्मचारी है और अभी - अभी ईसाई धर्म स्वीकार कर चुका है, दिन - रात सफाई करता और क्वारंटीन में रह रहे लोगों की सेवा करता निष्काम भाव से, बिना स्वार्थ के| बाइबिल में एक कहानी है जिसका सार यह है कि "प्राणिमात्र की सेवा करना ही धर्म है| भूखे को खाना, प्यासे को पानी, नंगे को कपड़े, बीमार की सेवा यदि करते हो तो तभी मनुष्य जन्म लेना सार्थक है|" 4 कहने का तात्पर्य यह कि ईश्वर प्राणिमात्र में निहित है और उनकी सेवा करना ही ईश्वर की सेवा है| हालांकि प्लेग और क्वारंटीन से डरता भागू भी है किंतु उसने अपने रेवरंड मोनित लाम से सुन रखा है कि "परमेश्वर यीशु मसीह यही सिखाता है कि बीमार की मदद में अपनी जान तक लड़ा दो... मैं समझता हूँ..." 5 भागू ने इस बात को अच्छी तरह से गाँठ बाँध ली है, यही कारण है की इतनी भयावह परिस्थितियों में भी वह चाहता है कि उसका यह निकम्मा शरीर लोगों के काम आए| आज जबकि हम धर्म के नाम पर लड़ाइयाँ करते हैं किंतु धर्म में मानवजाति के लिए बताई गई बातों का पालन नहीं करते ऐसी स्थिति में सब व्यर्थ ही है| आज हम लोग भी आस-पड़ोस में ऐसे लोगों को देखते हैं किंतु इनकी संख्या बहुत कम है

लेकिन है तो! भागू के इसी व्यवहार से डाक्टर बड़ा प्रेरित होता है और निश्चय करता है कि आज से वह भी क्वारंटीन में रह रहे लोगों की सेवा करेगा| लेकिन कहने और करने की दुविधा और क्वारंटीन का खौफ उसे रोक देते हैं| कहानीकार ने डाक्टर के दिखावटीपन को भी उजागर कर दिया है| कहानीकार ने लिखा है, "फिर भी उस दिन भागू को साथ ले कर मैंने क्वारंटीन में बहुत काम किया। जो काम मरीज़ के ज़्यादा क़रीब रह कर हो सकता था, वो मैंने भागू से कराया और उसने बग़ैर हिचकिचाए हुए किया... ख़ुद मैं मरीज़ों से दूर दूर ही रहता, इसलिए कि मैं मौत से बहुत डरा हुआ था और इससे भी ज़्यादा क्वारंटीन से।" 6

कहानी का एक मार्मिक प्रसंग तब उपस्थित होता है जब भागू की पत्नी प्लेग की चपेट में आ जाती है और वह दौड़कर डाक्टर के पास जाता है| डाक्टर उसे उसकी गलती बताता है कि किस प्रकार लोगों की सेवा करना, उनके संपर्क में आना ही उसकी पत्नी की प्लेग से पीड़ित होने की वजह बनी और डाक्टर वहाँ नहीं जाता| और वह कह देता है "चलो हटो बड़े...आए कहीं के ... तुमने जान-बूझ कर आग में हाथ डाला। अब उसकी सज़ा मैं भुगतूँ? कुर्बानी ऐसे थोड़े ही होती है। मैं इतनी रात को तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकता..."7 थोड़ी देर बाद वह दवाइयाँ लेकर वहाँ जाता है किंतु भागू की पत्नी दम तोड़ चुकी होती है| डाक्टर समझ जाता है कि अब भागू क्वारंटीन नहीं जाएगा किंतु वह तो और बढ़ - चढ़कर वहाँ लोगों की देखभाल करता है| इस दहशत और नकारात्मकता भरे समय में जब आदमी - आदमी से दूर ही रह रहा है संवेदनहीनता बढ़ रही है और मानवीयता बस नाम भर को रह गई है, भागू जैसे लोग बिना अपनी जान की परवाह किए आज भी निष्काम सेवा कर्म में रत हैं| इन्हीं लोगों की वजह से एक सकारात्मकता की तरंग सी उठने लगती है और मानवीयता अब भी जिंदा है का नारा लगाने लगती है|

कहानी का अंत होता है प्रशासन और समाज की मानसिकता पर आघात द्वारा| क्वारंटीन में प्लेग से पीड़ित लोगों की असली सेवा की भागू ने किंतु प्लेग से निजात पाने के उपरांत जब एक कार्यक्रम में डाक्टर को इनाम देकर सम्मानित किया जाता है उसके कार्यों की सराहना की जाती है तब भागू जैसे निष्काम तथा स्वार्थरहित सेवा करनेवालों के प्रति उपेक्षा का भाव दिखाई देता है| कहानीकार के ही शब्दों में, "उसी दिन जलसे के बाद जब मैं बतौर एक लेफ़्टीनेंट कर्नल के अपनी ग़ुरूर से लदी गर्दन को उठाए हुए, हारों से लदा फंदा, लोगों का दिया एक हज़ार एक रुपये का वो छोटा सा तोहफ़ा जेब में डाले घर पहुँचा, तो मुझे एक तरफ़ से आहिस्ता सी आवाज़ सुनाई दी, "बाबू जी... बहुत बहुत मुबारक हो। और भागू ने मुबारकबाद देते वक़्त वही पुराना झाड़ू क़रीब ही के गंदे हौज़ के एक ढकने पर रख दिया और दोनों हाथों से गमछा खोल दिया। मैं भौंचक्का सा खड़ा रह गया।" 8 वर्तमान दौर में कोरोना से ग्रस्त हमारे समाज की इसी सोच पर दृष्टिपात करवाते हुए सौरभ कुमार राय लिखते हैं, "समाज की सामूहिकता मूलत: डाक्टरों एवं नर्सों के प्रति दिख रही है| हालांकि ये गौरतलब है कि किसी भी स्वास्थ्य केंद्र में बीमारियों से संक्रमण का अत्यधिक खतरा वहाँ काम करनेवाले पैरा मेडिकल एवं सफाई कर्मचारियों को रहता है| हमारी सामाजिक चेतना इन सफाई कर्मचारियों एवं पैरा मेडिकल कर्मचारियों के प्रति साधारणत: उदासीन ही दिखाई पड़ती है|" 9

वर्तमान दौर में कोरोना महामारी ने भी विकराल रूप धरण कर लिया है| न जाने कितनों ने अपने परिवार के सदस्यों को खोया और कितनों ने रिश्तेदारों को| साहित्यिक जगत और फिल्मी जगत भी इसकी चपेट में आया और अमूल्य सितारों को हमने खो दिया| आक्सीजन की कमी, रेमेडीसीवीर की कालाबाजारी हम मूकदर्शक बने देख ही रहे हैं| कोरोना केवल संपर्क में आने से भी फैल रहा है!

दिन - प्रतिदिन कोरोना संक्रमितों के बढ़ते आँकड़े नकारात्मकता को भी बढ़ा देते हैं और ये बातें हमें अकर्मण्य बनाने हेतु पर्याप्त हैं| किंतु एक बात यह भी स्मरण रखनी चाहिए की समय कितना भी विकराल रूप क्यों न धारण कर ले सकारात्मक रहकर ही हम इन समस्याओं से उबर सकते हैं| जीवन में आशा की किरण सदैव मुसकाती रहनी चाहिए| महेंद्र भटनागर जी की पंक्तियाँ बरबस स्मरण हो आईं - 'पंथी! लड़खड़ाओ मत भोर होती है'| इस अंधकारपूर्ण समय में आशा, उत्साह और सकारात्मकता की भोर सभी के जीवन में और समस्त चराचर में आएगी अवश्य!

निष्कर्ष

समग्रत: कहा जा सकता है कि क्वारंटीन कहानी जितनी सटीकता से उस समय के सत्य को चित्रित करती है उतनी ही आज के समय को भी| इसमें कोई संदेह नहीं की कहानी वर्तमान दौर में कोरोना महामारी के प्रकोप को भोग रही समूची मानवजाति का सार - सत्य प्रस्तुत करने लगती है| प्लेग का प्रकोप और उसका प्रभाव आज के संदर्भ में कोरोना की भयावहता और दहशत के साथ परावर्तित करना ही मेरा लक्ष्य रहा है| वैसा ही डर, प्रशासन की कोताही हम आज भी देख सकते हैं जैसे कहानी में चित्रित है| आज जबकि आदमी - आदमी से दूर जा रहा है, संवेदनहीनता अपने चरम पर है और स्वार्थी वृत्ति थमने का नाम नहीं ले रही ऐसी स्थिति में कहानी का पात्र विलियम भागू जैसे लोग भी हैं जो निष्काम सेवा कर्म में स्वयं को झोंककर मानवीयता को जिंदा रखने की पुरजोर कोशिश कर रहे हैं | कोरोना से ग्रस्त हमारे समाज में भी भागू जैसे निष्काम, स्वार्थरहित सेवा करने वालों की संख्या ऊँगलियों पर गिनने जितनी ही है| साथी हाथ बढ़ाने के स्वर में समूची मानवजाति यदि कर्म पथ पर अग्रसर हो तो कोरोना के संकट से हम अवश्य मुक्त हो सकते हैं|

संदर्भ सूत्र

1. खान जाहिद- https://satyahindi.com/literature - 1 सितंबर 2020
2. बेदी राजिंदर सिंह - अनुवाद - संजीव कुमार तथा डॉ. जिया उल हक - "क्वारंटीन" - दिनांक 14/5/2021
3. वही
4. पवित्र बाइबल - मत्ती रचित सुसमाचार, (अध्याय २५:३१-४५) - बाइबल सोसायटी ऑफ़ इंडिया, बंगलोर
5. बेदी राजिंदर सिंह - अनुवाद - संजीव कुमार तथा डॉ. जिया उल हक - "क्वारंटीन" - दिनांक 14/5/2021
6. वही
7. वही
8. वही
9. राय सौरभ कुमार - "राजिंदर सिंह बेदी: महामारी तथा वर्तमान संदर्भ"- samalochan.blogspot.com - 12 अप्रैल 2020